भारत में शिशु मृत्यु दर तथा मात्र मृत्यु दर के विशेष सन्दर्भ में मृत्यु दर की प्रवर्तियाँ

मृत्यु दर (death rate) : प्रति 1000 जीवित जन्मे शिशुओं मे से एक वर्ष या इससे कम उम्र मे मर गये शिशुओं की संख्या है। जन्म और मृत्यु हमारे जीवन का आरंभ और अंत है। जन्म और मृत्यु हमारे जीवन का आरंभ और अंत है।चिकित्सा विज्ञान में सुधार के कारण हमारा जीवनकाल पहले की तुलना में बढ़ गया है। चिकित्सा विज्ञान के सुधार के कारण हमारी मृत्यु दर भी कम हुई। इसलिए हमारी जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है।और यही कारण है कि हमारा देश दुनिया का दूसरा सबसे अधिक आबादी वाला देश है। संयुक्त राष्ट्र द्वारा प्रकाशित नए वैश्विक जनसंख्या अनुमानों के अनुसार भारत की जनसंख्या वृद्धि दर में कमी आ रही है और इसका वैश्विक जनसांख्यिकी पर ठोस प्रभाव पड़ रहा है. सन 2019 के जनसंख्या अनुमान की तुलना पिछले वर्षों से करने पर पता चलता है कि आने वाले समय में भारत की जनसंख्या के बारे में लगाए गए अनुमानों में संशोधित कमी किसी भी देश के मुकाबले सबसे अधिक है. वहीं चीन की जनसंख्या वृद्धि को लेकर इन अनुमानों को हर बार संशोधित कर बढ़ाया गया है.

भारत कब चीन को जनसंख्या के मामले में पीछे छोड़ देगा, इस अनुमान में भी हर साल उतार-चढ़ाव होता रहा है. 2019 के अनुमान के मुताबिक भारत जनसंख्या के मामले में चीन को 2027 में पीछे छोड़ देगा. 2008 में यह अनुमान 2028 का था. वहीं 2015 के अनुमान के मुताबिक भारत ऐसा 2022 में करने वाला था.

भारत की जनसंख्या वृद्धि को लेकर किए जा रहे इन संशोधनों ने वैश्विक उम्मीदों को पीछे छोड़ दिया है. इन संशोधनों में भारत की जनसंख्या वृद्धि दर को लगातार घटता हुआ दिखाया गया है.

जनसंख्या अनुमान पूरी तरह से इस तथ्य पर आधारित होते हैं कि एक देश में जन्म और मृत्यु दर की दशा क्या है. भारत में जन्म दर अंतराष्ट्रीय संस्थाओं के अनुमान के मुकाबले बहुत तेजी से घटी है. खासकर भारत के गरीब राज्यों में इसमें अभूतपूर्व कमी आई है. उच्च जन्म दर के लिए जाने जाने वाले समुदाओं में भी इस ओर ठोस कमी हुई है. जनसांख्यिकी ट्रेंड्स के आधार पर 2.1 की जन्म दर को जनसंख्या वृद्धि दर के लिए स्थिर दर माना जाता है. मतलब अगर एक महिला औसतन 2.1 बच्चों को जन्म देती है, तो भविष्य में जनसंख्या उसी समान आकार की बनी रहेगी जितनी की वर्तमान में है. 2013 में भारत में जन्म दर 2.3 थी. 2012 में यह 2.4 थी. वर्तमान समय की अगर बात करें तो बिहार और मेघालय में ही जन्म दर 3 है. बाकी सभी राज्यों में जन्म दर 2.1 के नीचे है. नए आंकड़ों से पता चला है कि भारत के गरीब राज्यों में जन्म दर बहुत तेजी से घटी है. खासकर पढ़ी-लिखी महिलाओं के बीच यह कमी सर्वाधिक है.

समुदायों की अगर बात करें तो हिंदुओं के मुकाबले मुसलमानों में जन्म दर अधिक है, लेकिन मुसलमानों में जन्म दर हिंदुओं के मुकाबले तेजी से घट रही है. इस प्रकार दोनों

समुदायों के बीच जन्म दर का अंतर तेजी से घटता जा रहा है. नेशनल फैमिली हेल्थ सर्वे के अनुसार 1992-93 में यह अंतर जहां 30 फीसदी का था, वहीं 2015-16 में यह अंतर 23.8 फीसदी का रह गया है.

जनसांख्यिकी विशेषज्ञ शाश्वत घोष के अनुसार जो राज्य समृद्ध, शिक्षित और स्वस्थ होते जा रहे हैं, वहां जन्म दर लगातार कमी होती जा रही है. इन राज्यों में रहने वाली सभी महिलाएं कम बच्चों को जन्म दे रही हैं. इस हिसाब से दक्षिणी राज्यों में रहने वाली मुस्लिम महिलाओं में जन्म दर उत्तर भारत में रहने वाली हिंदू महिलाओं के मुकाबले कम है.

मुस्लिम महिलाओं में अधिक जन्म दर की समस्या केवल उन राज्यों में ही अधिक है, जहां सभी महिलाओं में जन्म दर अधिक है. शाश्वत घोष के अनुसार उन जिलों में भी जहां कुल जन्म दर कम है, वहां शायद ही उच्च मुस्लिम जन्म दर वाला कोई जिला है. भारत में जन्म दर बेटे के जन्म के साथ बहुत मजबूती से जुड़ी हुई है. इस पूरे समय में जब भारत में जन्म दर गिरी है, उसमें लिंगानुपात में भारी परिवर्तन हुआ है. यह लिंगानुपात बेटों के पक्ष में झुका है.

परिवार के आकार में भी इस लिंगानुपात में बेटों को तरजीह मिली है. नेशनल फैमिली हेल्थ सर्वे के मुताबिक 15 से 49 वर्ष की 89 प्रतिशत महिलाएं चार लोगों के परिवार में दो बेटों के साथ संतुष्ट हैं. लेकिन वे महिलाएं जिनके पास केवल बेटियां हैं, वो परिवार की संख्या में बढ़ोतरी चाहती हैं. 15 से 49 वर्ष की 69 फीसदी महिलाएं जिनके पास दो बेटियां हैं और एक भी बेटा नहीं है, वे और बच्चे पैदा नहीं करना चाहती हैं.

भारत में पांच वर्ष से कम उम्र के बच्चों की मृत्यु दर पहली बार दुनिया के अंडर 5 बच्चों की मृत्यु दर के बराबर आ गई. इससे पहले तक भारत की दर पूरी दुनिया के मुकाबले कहीं ज़्यादा थी. 1990 में भारत की शिशु मृत्यु दर प्रति 1000 पर 129 थी. 2005 में ये घटकर 58 हो गई, जबकि 2017 में ये प्रति 1000 पर 39 रह गई है. साथ ही दुनियाभर में होने वाली मौतों में भारत का हिस्सा घटकर 18 प्रतिशत हो गया. यानी भारत में दुनिया के 18% बच्चे पैदा हुए और 18% बच्चे ही मरे. 1990 में दुनिया के 18% बच्चे भारत में पैदा हुए थे, लेकिन मरे 27%.

वहीं लड़के और लड़कियों की मौत का अंतर भी घटा है. पहले 10% ज़्यादा लड़कियां मरती थीं, लेकिन 2017 में लड़कों के मुकाबले सिर्फ़ 2.5% ज़्यादा लड़कियों की मौत हुई. ये सारे आंकड़े भारत के लिए सकारात्मक संकेत दे रहे हैं क्योंकि शिशु मृत्यु दर किसी भी देश की सेहत को दर्शाती है. मृत्यु दर जितनी कम होगी, देश उतना अधिक सेहतमंद कहलाएगा.

यूनीसेफ़ इंडिया के स्वास्थ्य प्रमुख गगन गुप्ता ने बीबीसी को बताया, "अधिकतर प्रसव अस्पताल में होने, नवजात शिशुओं की देखभाल के लिए सुविधाओं का विकास और टीकाकरण बेहतर होने से शिशु मृत्यु दर में कमी आई है. पहली बार भारत में 10 लाख से कम बच्चों की मौत हुई है. 2017 में ये आंकड़ा 9 लाख 89 हज़ार रहा. ये नंबर आपको ज़्यादा लगेगा, लेकिन भारत की

आबादी के लिहाज से बहुत बड़ा देश है. मृत्यु दर प्रति 1000 बच्चों पर तय की जाती है और ये दर पहले से बहुत कम हुई है. ये भारत के लिए अच्छी खबर है."

यूएन की ये रिपोर्ट दुनिया के अलग-अलग देशों की मृत्यु दर पर बात करती है, लेकिन भारत के अंदरूनी राज्यों में इसका क्या हाल है और पड़ोसी देशों के मुकाबले भारत की मृत्यु दर कितनी बेहतर या बदतर है? स्थानीय आधिकारिक रिपोर्टों के आधार पर कहते हैं, "केरल और तमिलनाडु में शिशु मृत्यु दर सबसे कम है, जबकि मध्य प्रदेश, असम और उत्तर प्रदेश में ज़्यादा बच्चे मरते हैं."

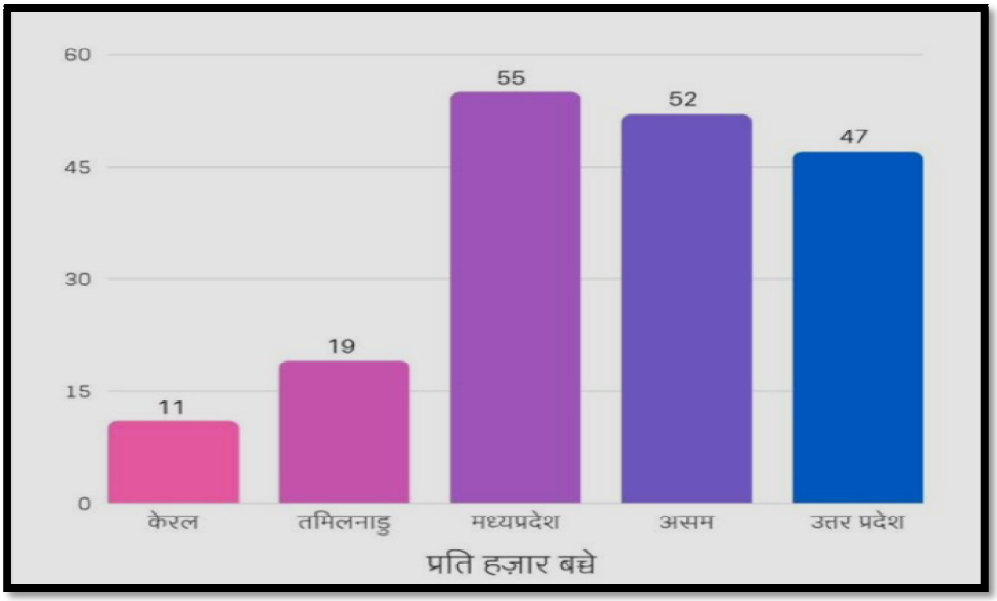

मृत्यु दर कम-ज़्यादा होने की वजहें

गगन के मुताबिक जिस इलाके में शिक्षा का स्तर ज़्यादा होता है और आधारभूत स्वास्थ्य सेवाएं बेहतर होती हैं वहां शिशु मृत्यु दर कम रहती है. अगर मां 12वीं पास है तो बच्चे की मौत की आशंका 2.7 गुना तक कम हो जाती है. यही वजह है कि तमिलनाडु और केरल जैसे राज्यों में मृत्यु दर कम है. साथ ही इन राज्यों में स्वास्थ्य सेवाएं भी बेहतर हैं. यहां छोटे-मोटे इलाकों में भी अच्छे अस्पताल होते हैं. वो कहते हैं कि मृत्यु दर कम-ज़्यादा होने की तीन वजहें हो सकती हैं - "अमीरी-गरीबी, मां की शिक्षा और गांव या शहर में बच्चे का पैदा होना." लड़कों के मुकाबले लड़कियों की मृत्यु दर पहले से कम हुई है, लेकिन अब भी ये विश्व मृत्यु दर से काफ़ी ज़्यादा है. जबकि पाकिस्तान समेत कई देशों में लड़कियां लड़कों से कम मरती हैं. गगन को उम्मीद है कि अगले कुछ सालों में लड़के और लड़कियों की मृत्यु दर के बीच का फ़ासला ख़त्म हो जाएगा. सकारात्मक संकेत मिलने लगे हैं और इसकी वजहें हैं, "कई जगह बच्चियों के पैदा होने पर प्रोत्साहन राशि दी जाती है, मुफ्त स्वास्थ्य सेवाएं और शिक्षा दी जाती है. इन सब चीज़ों से

लड़कों के मुकाबले लड़कियों की मृत्यु दर चार गुना घटी है. पहले 10% ज़्यादा लड़कियां मरती थीं, लेकिन अब सिर्फ 2.5% ज्यादा मर रही हैं." हालांकि गगन ये भी मानते हैं कि लोग आज भी लड़कियों के स्वास्थ्य और शिक्षा पर खर्च नहीं करना चाहते, इसलिए लोगों को ये मानसिकता बदलनी होगी. वो इसे बदलने में मीडिया की भूमिका को अहम मानते हैं.

और कम कैसे होगी मृत्यु दर

बच्चों की ज़्यादातर मौतें पोषण की कमी या इन्फ़ेक्शन की वजह से होती हैं. इसलिए 'पोषण' अभियान के तहत जरूरी पोषक तत्व मुहैया कराने और देश को खुले में शौच से मुक्त (ओडीएफ) कराने जैसे राष्ट्रीय स्तर पर चलाये जा रहे अभियानों से भी मदद मिलेगी. समाज और सरकार दोनों ही स्तरों पर कोशिशों से आकड़े और बेहतर हो जाएंगे.

- हर मां की डिलिवरी अस्पताल में ही हो.
- जन्म के एक घंटे के अंदर मां का पीला दूध पिलाएं.
- सबसे ज़्यादा मौतें जन्म से एक महीने के अंदर होती हैं. इसलिए इस दौरान बच्चे का ज़्यादा ख्याल रखें.

जन्म का दिन सबसे खुशी का भी दिन है और सबसे ख़तरे का भी दिन है. अधिकतर बच्चों की मौत जन्म के दिन या जन्म के 24 घंटे के अंदर होती है और उसके बाद पहले एक महीने में सबसे ज़्यादा मौतें होती हैं. भारत सरकार ने मंगलवार से होम बेस्ड यंग चाइल्ड प्रोग्राम शुरू किया है जिसके तहत आशा वर्कर हर तीन, छह, नौ, 12 और 15 महीने पर बच्चे के घर जाएगी. वो बच्चों को सही पोषण, उसकी सेहत और विकास का ख़्याल रखने में मदद करेगी. इसके अलावा प्रधानमंत्री अगले हफ्ते ही हेल्थ एंश्योरेंस लागू करने वाले हैं. यूनीसेफ़ इंडिया के हेल्थ चीफ़ गगन कहते हैं कि इन समुदायिक और सरकारी कोशिशों से शिशु मृत्यु दर को और कम किया जा सकता है. 2017 के दौरान भारत में लड़कों की मृत्यु दर प्रति 1,000 बच्चे पर 39 थी, जबकि लड़कियों में यह प्रति 1,000 बच्चियों पर 40 थी. वहीं पाकिस्तान में लड़कों की मृत्यु दर प्रति 1,000 बच्चे पर 78 थी, जबकि लड़कियों में यह प्रति 1,000 बच्चियों पर 71 थी. दुनिया में कई देश हैं जहां लड़कों के मुकाबले लड़कियां कम मरती हैं.

"भारत की प्रोग्रेस अच्छी है. आने वाले समय में आंकड़े और बेहतर होने की उम्मीद है. इसके लिए सतत प्रयास की ज़रूरत है. गर्ल चाइल्ड के लिए और ज़्यादा काम करने की ज़रूरत है. साथ ही नवजात पर और फ़ोकस करने की ज़रूरत है क्योंकि 2017 में भारत में मरने वाले 9 लाख 89 हज़ार बच्चों में से 6 लाख 5 हज़ार नवजात बच्चे थे.